सम्मानित मंच व सदन दोनों को ही मेरा नमन।
बन्धुवर न्यायमूर्ति श्री विवेक बिरला जी,
जनपत न्यायधीश श्री दिनेश शर्मा जी,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के कुलपति श्री तनेजा जी,
मेरे बड़े भाई श्री राजेंद्र शर्मा जी,
मेरे बाल सखा अमित जी,
संजय जी,
उपस्थित सभी चिकित्सक गण,
मेरे स्कूल के सहपाठी मित्र गण,
मेरे ही स्कूल सेंट मैरीज अकादमी के वर्तमान प्रिंसिपल महोदय,
उपस्थित देवियों और सज्जनों व सभी सनेही जन।

मेरठ नगर में मैं पला बड़ा हुआ । शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात मैं तीर्थराज प्रयाग पहुँच गया यहाँ मुझे संगम क्षेत्र में माँ गंगा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सरस्वती की असीम कृपा से हिंदी साहित्य व धार्मिक अनुष्ठान की और मेरा मन अग्रसित हो गया। यमुना जी से कुछ गंभीर प्रवृति मिली। अल्प काल के लिए प्रदेश की राजधानी अवधपुरी में भी रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस वर्ष के प्रारम्भ में ही एका एक भारत माँ के आभामंडल श्रीनगर में व माता वैष्णो देवी के चरणों में स्थान प्राप्त हुआ। परन्तु आज फिर मेरठ आने पर ऐसा एहसास हो रहा है जैसे किसी बच्चे को उसकी माँ को गोदी व पल्लू मिल गया हो। मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। इसका श्रेय मैं अपने मित्र अमित को दूंगा जिन्होंने अनुरोध कर कर के मुझे आप सब के बीच आने के लिए बाध्य कर दिया। मैं नानक चंद कॉलेज व "पण्डित गंगादान अम्ब्रीष शर्मा चैरिटेबल सोसाइटी" का हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस सारस्वत सम्मान से सम्मलित होने का सौभाग्य प्रदान किया।

अपने साथियों व मेरठ की हस्तियों को देख और मिल कर मेरा मन बहुत ही प्रफुल्लित है। आज इस मंच से हमारे शहर के नामी चिकित्सों को उनकी विशेष सेवाओं के लिए सम्मानित किया जा रहा है। यह सम्मान केवल इन्ही का नहीं है परन्तु चिकित्सा वयवसाय से जुड़े सभी चिकित्सों का व चिकित्सा कर्मियों का है जिन्होंने हमेशा अपनी परवा न कर देश के बीमार लोगों की सेवा व इलाज किया। कोविड महामारी में इनका सहयोग अतुलनीय रहा है जो भुलाए नहीं भूलेगा। आज इनको सम्मानित करके मैं खुद सम्मानित और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। इस अवसर पर मुझे डॉक्टर कुटनीस की अमर कहानी याद आ रही है

> "डॉ द्वारकानाथ शान्ताराम कोटणीस एक भारतीय चिकित्सक थे जिन्हें १९३८ के चीन-जापान युद्ध के समय अन्य चार चिकित्सकों के साथ

चिकित्सकीय सहायता प्रदान करने के लिये चीन भेजा गया था। अगले करीब पांच वर्षों तक कोटनीस ने सैकड़ों लोगों की जान बचाई। मोबाइल क्लिनिक के ज़रिये वह ज़रूरतमंदों तक किसी मसीहा की तरह पहुंचते। एक वाकया तो उनके साथ हमेशा के लिए जुड़ गया। बताया जाता है कि एक मौके पर उन्होंने लगातार 72 घंटे तक घायल सैनिकों के ऑपरेशन किए। बिना कोई नींद लिए।कोटनीस ने चीनी जनता और सरकार का दिल जीत लिया। उन्हें डॉ. बेथ्यून इंटरनैशनल पीस हॉस्पिटल का डायरेक्टर बना दिया गया। कई-कई घंटे बिना रुके काम करने का असर दिखने लगा। डॉक्टर कोटनीस कमजोर पड़ने लगे। 1942 में उन्हें मिर्गी का दौरा पड़ा और आख़िरकार इसी साल 9 दिसंबर को उन्होंने आख़िरी सांस ली। उम्र थी केवल 32।"

चिकित्स्कों का प्रोफेशन एक नोबल प्रोफेशन है। नोबल इसलिए नहीं कि इस व्यवसाय में अच्छे और बड़े घरों से लोग आते हैं या वह पढाई में बहुत तेज़ होते हैं, परन्तु नोबल इस लिए कि चिकित्सक परोपकार की भावना से व सेवा भाव से अपने कार्य को करते हैं। उनका यह कार्य अपने व अपने परिवार की कीमत पर होता है।

आज इस सारस्वत कार्यक्रम में शिक्षा संस्थान से जुड़े, चिकित्सा जगत से जुड़े व वकालत के व्यवसाय से जुड़े लोग तो सम्मलित हैं हि और साथ में मेरे बचपन के मित्र गण भी हैं जो इस कार्यक्रम को एक अदभुदता प्रदान करता है ऐसा संगम शायद ही कहीं देखने को मिलता होगा।

मेरठ वासियों के अद्भुत प्रेम व सहयोग से ही मैं अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ सका हूँ। मेरठ ने मुझे एक अटूट ऊर्जा प्रदान की है और मैं आगे बढ़ता गया हूँ। मैंने हमेशा प्रयास किया है कि जो भी कार्य मिला उसे ध्यान से मैं पूर्ण अनुशासन से निर्वाह कर सकूं। मेरठ के इसी सहयोग से आगे भी मेरठ वासी विभिन्न क्षेत्रों में मेरठ की पताका फहराते रहेंगे।

आप सभी का मुझे हमेशा से आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है और मैं अपेक्षा करता हूँ आगे भी आप मेरा इसी प्रकार साथ देते रहेंगे। मेरठ के लिए मेरे से जो कुछ थोड़ा बहुत बन सकता है मैं अपने स्तर से करता रहूँगा। इन्ही शब्दों के साथ मैं आप सब का आभार व्यक्त करता हूँ और सभी के कल्याण की कामना करता हूँ।

जय हिंद

(एनएएस डिग्री कॉलेज मेरठ के नानक चंद सभा गृह में दिनांक 20.08.2021 को आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य न्यायमूर्ति, जम्मू एंड काश्मीर एंड लद्दाख का उद्बोधन)